Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for BA part 2, paper 3

Topic:–पाल वंश का एक संक्षिप्त परिचय दें।

कन्नौज पर प्रभुत्व के लिए हुए संघर्ष में उत्तरी भारत की जिन शक्तियों ने भाग लिया, वे थे बंगाल के पाल और मांडव्यपुर (मंदौर) के गुर्जर प्रतिहार। इन दोनों राज्यों के इर्द-गिर्द ही उत्तरी भारत की राजनीति घूमती रही। दोनों ही राज्यों का उदय लगभग एक ही समय 8वीं शताब्दी में हुआ और दोनों का पतन भी साथ-ही-साथ 11वीं शताब्दी में हुआ।शशांक की मृत्यु एवं हर्षवर्द्धन के पश्चात बंगाल की राजनीतिक स्थिति बिगड़ गई। वहाँ वस्तुतः मत्स्यन्याय की स्थिति व्याप्त हो गई। आर्यमंजुश्रीमूलकल्प में शशांक की मृत्यु के बाद बंगाल की स्थिति का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया गया है, "सोम (शशांक) को मृत्यु के बाद गौड़ की राजनीतिक व्यवस्था पारस्परिक अविश्वास का शिकार हो गई, आपसी ईर्ष्या-द्वेष और संघर्ष के बीच कोई एक सप्ताह तक राजा हुआ तो कोई एक मास तक और पुनः गणतंत्रतात्मक शासन लागू हुआ। गंगा के इस किनारे पर यह नित्यप्रति की अवस्था हो गई। विहारों के ध्वंसावशेषों से भवनों का निर्माण हुआ। तत्पश्चात मानव नामक पुत्र आठ मास तक शासक रहा।" ह्वेनसांग, जिसने लगभग 638 ई० में बंगाल की यात्रा की थी, का कहना है कि उस समय बंगाल में चार स्वतंत्र राज्य थे- पुंड्रवर्धन, कर्णसुवर्ण, समतट और ताम्रलिप्ति । 7वीं शताब्दी में ही बंगाल के एक बड़े भू-भाग पर हर्षवर्द्धन और उसके मित्र कामरूप के राजा भास्करवर्मन ने अधिकार कर लिया था। 8वीं शताब्दी में शैल राजाओं ने पुण्ड्र (उत्तरी बंगाल) पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। शैलवंश के अतिरिक्त खड्गवंश और चंद्रवंश का भी उदय हुआ। बंगाल पर कन्नौज के राजा यशोवर्मन, कश्मीर के शासक ललितादित्य एवं कामरूप के श्रीहर्ष का भी आक्रमण हुआ। इन आक्रमणों ने बंगाल की अवस्था अत्यंत दयनीय बना दी। लामा तारानाथ के शब्दों में, "प्रत्येक क्षत्रिय, ब्राह्मण अथवा वैश्य अपने घर में राजा हो गया और संपूर्ण देश पर कोई राजा न रहा।" इस प्रकार संपूर्ण बंगाल में मत्स्यन्याय की स्थिति हो गई। इन्हीं परिस्थितियों में पालवंश का उदय हुआ, जो शीघ्र ही उत्तरी भारत की प्रमुख शक्ति बन बैठा। पाल अभिलेखों, लामा तारानाथ के बौद्धधर्म का इतिहास, आर्यमंजुश्रीमूलकल्प, संध्याकरनन्दी के रामपालचरित एवं अन्य समकालीन स्रोतों से पालों के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।